लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1266

01 दिसम्बर, 2014 को उत्तर के लिए

इस्पात पीएसयू के लिए खानें

1266. श्री निशिकान्त दुबे:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) देश में इस्पात उत्पादन करने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) का ब्यौरा क्या है;

(ख) उक्त पीएसयू में प्रत्येक के साथ संबद्ध खानों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या उक्त पीएसयू को दी गई खानें उनके उत्पादन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

इस्पात और खान राज्य मंत्री **श्री विष्णु देव साय**

(क): इस्पात मंत्रालय के अंतर्गत इस्पात उत्पाद करने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के दो उपक्रम (पीएसयू) अर्थात् स्टील ऑथिरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) और राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) हैं।

(ख): सेल, झारखंड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल राज्यों में कैप्टिव उपयोग के लिए नौ लौह अयस्क खदानों और सात फ्लक्स खदानों (लाइमस्टोन एवं डालोमाइट) तथा चार कोयला खदानों का प्रचालन कर रहा है। इनके अतिरिक्त, सेल के पास रावघाट में लौह अयस्क डिपॉजिट और बारादौर (छत्तीसगढ़) में डोलोमाइट डिपोजिट भी हैं। आरआईएनएल के पास कोई संबद्ध लौह अयस्क या कोयले की खदान नहीं है, लेकिन इसने चार फलस्क खदानें हैं, जिनमें से आंध्र प्रदेश में लाइमस्टोन, मैंगनीज और सैंड की एक-एक तथा तेलंगाना में डोलोमाइट की एक खदान शामिल है।

(ग) और (घ): सेल कैप्टिव स्रोतों से लौह अयस्क संबंधी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। कैप्टिव और स्वदेशी स्रोतों से कोकिंग कोल की सीमित उपलब्धता के कारण सेल की लगभग 80 प्रतिशत कोकिंग कोल की आवश्यकता की पूर्ति आयातों द्वारा और लगभग 20 प्रतिशत की पूर्ति कैप्टिव स्रोतों सहित स्वदेशी स्रोतों से होती है। आरआईएनएल अपनी लौह अयस्क आवश्यकता की पूर्ति घरेलू आपूर्ति के जरिए तथा अपनी कोकिंग कोल की आवश्यकता की पूर्ति मुख्यत: आयातों के जरिए कर रहा है।

***